Dr M.K. Jha
Dept of Sociology
V.S.J. College
Rajnagar.

B.A. part - 1
Sociology (Hons)
paper - 1

Introduction to sociology

question - भारत में समाजशास्त्र के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

Ans - Stewart and glynn ने अपनी पुस्तक Introduction to sociology में कहा है कि "समाजशास्त्र एक ऐसा व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक विषय है जो एक सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य का, उसके समाज और विभिन्न समूहों का उनकी प्रथाओं एवं संस्था का तथा मनुष्य द्वारा विकसित उन सभी प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है जो समाज को स्थिर बनाती है अथवा उसमें परिवर्तन उत्पन्न करती है।" इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि समाजशास्त्र वह वैज्ञानिक ज्ञान है जो समाज, सामाजिक समूहों, सामाजिक मूल्यों तथा सामाजिक प्रक्रियाओं सम्बन्धित सभी प्रश्नों का अध्ययन करके सामाजिक जीवन को व्यवस्थित बनाने के लिए उपयोगी निष्कर्ष प्रदान करता है।

H.E Barnes के अनुसार समाजशास्त्र इतना महत्वपूर्ण विषय है कि यह सम्पूर्ण सामाजिक जीवन को समझने में हमारी सहायता करता है, सामाजिक अनुसंधान को वैज्ञानिक रूप देता है तथा उन नियमों को स्पष्ट करता है जिसके द्वारा मानव व्यवहारों को समझा जा सके।

समाजशास्त्र ने सामाजिक ज्ञान के विकास और समाज को संगठित बनाने के क्षेत्र में योगदान दिया है जिससे इसके महत्व को द्वारा समझा जा सकता है। अतएव, भारत जैसे विकासशील देश में समाजशास्त्र के अध्ययन के निम्न महत्व है:-

1. मानव व्यवहारों का समुचित ज्ञान - समाजशास्त्र मानव व्यवहारों का अध्ययन करता है मानव के विचार, कार्य करने, अनुभव करने के तरीकों को जानकर सन्तुलित विकास प्रक्रिया को जन्म देती है जिससे समाज में पारस्परिक सहयोग की स्थापना की जाती है।

2. सामाजिक समस्या का हल (solving) निकालना -
आज भारत में बेकारी, निर्धनता, जातिवाद, मद्यपान, अस्पृश्यता, क्षेत्रीयता, भाषावाद, बाल विवाह, अपराध, हिंसा, शोषण आदि अनेक समस्याएँ पायी जाती है। समाजशास्त्रीय अध्ययनों के द्वारा इनके मूल कारणों तथा सामाजिक दशाएं के उत्तरदायी पक्षों का ज्ञान प्राप्त कर समाधान के लिए व्यावहारिक एवं क्रियात्मक नीतियों को बनाया जाता है।

3. भावात्मक एकीकरण का आधार :-
भावात्मक एकीकरण उन समाजों के लिए सबसे अधिक आवश्यक है जिनमें एक-दूसरे से भिन्न धर्मों, संस्कृतियों, प्रजातियों, विश्वासों, मनोवृत्तियों और रुचियों वाले लोग साथ-साथ रहते हैं। समाजशास्त्र अपने अध्ययनों के द्वारा विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और प्रजातियों की एकता सम्बन्धी विशेषताओं को स्पष्ट करता है तथा एक-दूसरों को निकट लाकर भावात्मक एकीकरण का अवसर पैदा करता है।

4. नवीन परिस्थितियों से अनुकूलन :-
समाजशास्त्र बदलते हुए सामाजिक मूल्यों आदर्शों, विश्वासों तथा व्यवहार के नये-नये तरीकों के सम्बन्ध में ज्ञान प्रदान करता है समाजशास्त्रीय ज्ञान परिवर्तन की उत्तमता को जानता है तथा बदली हुई परिस्थिति से अनुकूलता का सुझाव एवं मार्ग दिखलाती है। जो एक आधुनिक महत्व है।

5. राष्ट्रीय एकता में सहायक :-
आज भारत में राष्ट्र के सम्मुख राष्ट्रीय एकता की समस्या है। आज राष्ट्र जाति प्रजाति, धर्म एवं भाषा के आधार पर विभक्त है। समाजशास्त्र ऐसे संकीर्ण मानसिकता में नया और व्यापक दृष्टिकोण देकर बन्धुत्व की भावना विकसित किया है जो राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

6. समाज-कल्याण के लिए आवश्यक -
समाज कल्याण का तात्पर्य समाज के पिछड़ी जातियों पिछड़े वर्गों, जन जातियों, स्त्रियों, विकलांग और असमर्थ व्यक्तियों का सामाजिक सुरक्षा एवं विकास करने से है। समाजशास्त्र ऐसे दुर्बल वर्गों एवं कमजोर का अध्ययन कर विभिन्न योजना एवं कार्यक्रमों का लाभ इन वर्गों को पहुंचाया है।

7. ग्रामीण पुनर्निर्माण का आधार:
समाजशास्त्र की एक शाखा के रूप में ग्रामीण समाजशास्त्र है जो ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक दशा का अध्ययन करती है तथा सामाजिक पुनर्निर्माण द्वारा ग्रामीण समुदाय के सन्तुलित विकास के लिए उपयोगी कार्यक्रम को लागू करवाती है।

8. सामाजिक नियोजन में सहायक -
सामाजिक नियोजन में समाजशास्त्र का उल्लेखनीय योगदान है क्योंकि संरचना, समूह, प्रथाओं का अध्ययन समाजशास्त्र करता है तथा शिक्षा, स्वास्थ्य आवास, न्यूनतम आवश्यकता और दलितों की समस्या के आर्थिक नियोजन को लागू करवाता है।

9. पारिवारिक संगठन के लिए महत्वपूर्ण -
आज परिवार में तनाव, विघटन, पालन पोषण और युवाओं एवं अधिक आयु वालों के बीच कठिनाइयों का अध्ययन समाजशास्त्र करता है इसके कारण को खोजकर समाधान प्रस्तुत करता है।

10. नगरीय विकास में सहायता:
समाजशास्त्र की एक शाखा के रूप में नगरीय समाजशास्त्र है। जो नगरीय जीवन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करता है नगरीय समस्याओं का निराकरण हेतु कई योजना एवं कार्यक्रमों को प्रस्तुत करता है।

भारत जैसे विकासशील देश में समाजशास्त्र के अध्ययन का विशेष महत्व है इसलिए बोटोमोर ने कहा है कि "यह हमारी सहानुभूति तथा कल्पना को विस्तृत बनाता है तथा हमारे समय, स्थान एवं सामाजिक स्थिति के घेरे से परे रहने वाले लोगों के बारे में हमारे ज्ञान में वृद्धि करता है तथा यह वर्तमान सामाजिक बुराइयों के उपचार के साधनों को भी प्रस्तुत करता है।"